IJNRD.ORG ISSN : 2456-4184
INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD) | IJNRD.ORG
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

''सवाईमाधोपुर जिले के केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड एवं माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक दुश्चिन्ता एवं समायोजन का

तुलनात्मक अध्ययन''

Comparative study of academic anxiety and adjustment of Secondary level students of Central Board of Secondary Education and Board of Secondary Education Rajasthan of Sawai Madhopur district.

मौसमी मीणा

शोद्यार्थी (शिक्षा), कला शिक्षा एवं समाज विज्ञान संकाय, जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर।

डॉ. सुरभि शर्मा

शोध निर्देशिका, व्याख्याता, शाह गोवर्द्धनलाल काबरा शिक्षक महाविद्यालय (सी.टी.ई.), जोधपुर।
(जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर)

सरांशः–

प्रस्तुत अध्ययन के अन्तर्गत सवाईमाधोपुर जिले के केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड एवं माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक दुश्चिन्ता एवं समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन किया गया। शोध अध्ययन के लिए सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। न्यादर्श के लिए सवाईमाधोपुर जिले के 200 विद्यार्थियों का चयन साधारण यादृच्छिक विधि द्वारा किया गया। इस शोध कार्य में आंकड़ों का संकलन करने हेतु डॉ. ए.के.सिंह तथा डॉ.ए. सेन गुप्ता द्वारा निर्मित शैक्षणिक दुश्चिन्ता अनुसूची एवं समायोजन स्तर को जानने के लिए डॉ. ए.के.पी. सिन्हा तथा डॉ. आर.पी. सिंह द्वारा निर्मित समायोजन अनुसूची का प्रयोग किया गया। आंकड़ों का विश्लेषण मध्यमान, प्रमाप विचलन एवं टी–परीक्षण के द्वारा किया। शोध अध्ययन से यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड एवं माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की परीक्षा दुश्चिन्ता में सार्थक तथा समायोजन में असार्थक अन्तर पाया गया।

संकेताक्षर :– केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, शैक्षिक दुश्चिन्ता, समायोजन।

प्रस्तावनाः–

समय का रथ इतनी तेजगति से दौड़ता है कि यदि कोई उसका साथ न दे सकें तो उसके पास केवल रथ के पहियों से जुड़ी हुई यादगारों की धूल ही रह जाती है। समय निरन्तर परिवर्तनशील है। समय सदैव ही बदलता रहता है, जो समय के साथ चलता है, उसे सफलता मिल जाती है। जबकि वक्त की अवहेलना करने वालों को तलवारों के तीक्ष्ण प्रहारों से बच जाने पर भी कोमल फूलों से कट कर नष्ट होते हुए देखा गया है। अतः किसी भी समाज या राष्ट्र के विकास के लिए भावी नागरिकों के लिए समय के अनुकूल प्रगतिशील शिक्षा की व्यवस्था करनी चाहिए। शिक्षा ही बालक के विकास का सर्वोत्तम मार्ग है, जिसके माध्यम से ही बालक अपने जीवन के लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु प्रयासरत रहता है। शिक्षा चुंकि व्यक्ति की मूल प्रवृत्तियों का मार्गांतीकरण करती हैं। वर्तमान शिक्षा प्रणाली के अन्तर्गत शिक्षा प्राप्त करने लिए विद्यालयों एवं शिक्षकों की व्यवस्था है। शैक्षिक दुश्चिन्ता मानव की विकास प्रक्रिया में रूकावट पैदा करती हैं। एक व्यक्ति जो शैक्षिक दुश्चिन्ता से पीड़ित होता है। वह किसी कार्य को करने में पूर्ण शक्ति का प्रयोग नहीं कर सकता, जो बालक शैक्षिक दुश्चिन्ता की अधिकता का अनुभव करते है।

समायोजन शब्द अंग्रेजी के एडजस्टमेन्ट शब्द का ही पर्यायवाची है। इसकी व्युत्पत्ति जीव विज्ञान के एडोप्शन शब्द से हुई है, जिसका तात्पर्य है कि अपने आपकों परिस्थितियों के अनुसार ढालना। जीवन की समस्याओं का समाधान समायोजन में ही निहित है। गेट्स जेरासिल्ड एवं अन्य (1970) के अनुसार ''समायोजन एक ऐसी सतत प्रक्रिया है, जिसके द्वारा एक व्यक्ति अपने व्यवहार में इस प्रकार से परिवर्तन करता है कि उसे स्वयं तथा अपने वातावरण के बीच और अधिक मधुर संबंध स्थापित करने में मदद मिल सकें।''

समायोजन वह पथ है, जिस पर चलते हुए हम ऐसे वातावरण में जो कभी सहायक है तो कभी जटील है, कभी हानिकारक है, अपनी आवश्यकताओं की तुष्टि करते है। हमारे समायोजित होने की प्रक्रिया केवल तभी घटित होती है, जब कुछ आवश्यकताएं हों और हम उन आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु अनेक मार्ग चुनते हैं और जब पर्यावरण जिसमें कि हम संतुष्टियां ढूंढ़ते हैं, हमारे प्रति तटस्थ या विरोधी बना रहे।

माध्यमिक शिक्षा, प्राथमिक शिक्षा और उच्च शिक्षा के मध्य की शिक्षा है। अंग्रेजी में इसके लिए सैकेण्डरी शब्द का प्रयोग किया जाता है, जिसका अर्थ–दूसरे स्तर की। पहले स्तर की प्राथमिक और उसके बाद दूसरे स्तर की यह सैकेण्डरी शिक्षा। आज किसी भी देश में माध्यमिक शिक्षा, प्राथमिक शिक्षा और उच्च शिक्षा बीच की कड़ी होती है। इस देश में माध्यमिक शिक्षा का श्री गणेश तो आधुनिक युग में ईसाई मिशनरियों ने किया। दूसरी तरफ ईस्ट कम्पनी ने भी अपने कर्मचारियों के बच्चों की शिक्षा के लिए माध्यमिक विद्यालयों की स्थापना की। भारत में आधुनिक माध्यमिक शिक्षा का स्वरूप निश्चित् करने में सबसे बड़ी भूमिका वुड के घोषणा पत्र, 1854 की रही। उसमें माध्यमिक शिक्षा के उद्देश्य एवं पाठ्यक्रम निश्चित किए गए।

शोध समस्या का चयनः–

सम्बन्धित साहित्यों का अवलोकन करने से शोद्यार्थी को सवाईमाधोपुर जिले के केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड एवं माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान के विद्यार्थियों की माध्यमिक स्तर की जानकारी प्राप्त की। वर्तमान समय के अनुसार यह आवश्यकता

महसूस की गई कि सवाईमाधोपुर जिले के केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड एवं माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक दुश्चिन्ता एवं समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन की जानकारी प्राप्त की जाये। इन्हीं तथ्यों को ध्यान में रख कर शोध समस्या का चयन किया गया।

समस्या का कथनः–

''सवाईमाधोपुर जिले के केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड एवं माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक दुश्चिन्ता एवं समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन।''

शोध के उद्देश्यः–

- सवाईमाधोपुर जिले के केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड एवं माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक दुश्चिन्ता का अध्ययन करना।
- सवाईमाधोपुर जिले के केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड एवं माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक दुश्चिन्ता का तुलात्मक अध्ययन करना।
- सवाईमाधोपुर जिले के केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड एवं माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के समायोजन का अध्ययन करना।
- सवाईमाधोपुर जिले के केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड एवं माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के समायोजन तुलनात्मक का अध्ययन करना।

शोध की परिकल्पनाऐंः–

- सवाईमाधोपुर जिले के केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड एवं माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक दुश्चिन्ता में कोई सार्थक अन्तर नही होता है।
- सवाईमाधोपुर जिले के केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड एवं माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के समायोजन में सार्थक अन्तर नहीं होता है।

शोध परिसीमनः–

शोध अध्ययन सवाईमाधोपुर जिले के केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड एवं माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान के माध्यमिक स्तर के कक्षा 10 के विद्यार्थियों तक सीमित रखा गया है।

न्यादर्शः–

इस शोध कार्य में न्यादर्श के लिए 200 विद्यार्थियों का चयन साधारण यादृच्छिक विधि द्वारा किया गया हैं, जिसमें से 100 विद्यार्थी केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड एवं 100 विद्यार्थी माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान माध्यम के है।

शोध विधिः–

शोध के निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु शोध अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया गया है।

शोध अध्ययन में प्रयुक्त उपकरणः–

शोद्यार्थी ने अपने शोध कार्य में प्रमापीकृत उपकरणों का उपयोग किया। शोद्यार्थी ने अपने शोध कार्य में आंकड़ों का संकलन करने के लिए डॉ. ए.के. सिंह तथा डॉ. ए. सेन गुप्ता के द्वारा निर्मित सम्बन्धित शैक्षिक दुश्चिन्ता एवं डॉ. ए.के.पी. सिन्हा तथा डॉ. आर.पी. सिंह के द्वारा निर्मित सम्बन्धित समायोजन परीक्षण का प्रयोग किया गया।

शोध अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकी तकनीक :–

किसी भी शोध में दत्त संकलन मात्र से शोध कार्य का महत्व नहीं हो जाता, जब तक की दत्त संकलन का विश्लेषण उपयुक्त सांख्यिकी विधियों द्वारा न किया जाए। एकत्रित सूचनाओं एवं संकलित तथ्यों का विश्लेषण कर व्याख्या की जाती है, तभी वह शोध उद्देश्य पूर्ण व उपयोगी होता है।

प्रस्तुत शोध में दत्त विश्लेषण एवं अर्थापन हेतु निम्न सांख्यिकी विधि का प्रयोग किया गया।

1. मध्यमान
2. प्रमाप विचलन
3. टी–परीक्षण

तथ्यों का विश्लेषण एवं व्याख्या :–

सवाईमाधोपुर जिले के केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड एवं माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक दुश्चिन्ता के मध्यमान का विश्लेषण एवं व्याख्या।

सवाईमाधोपुर जिले के केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड एवं माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक दुश्चिन्ता का मध्यमान

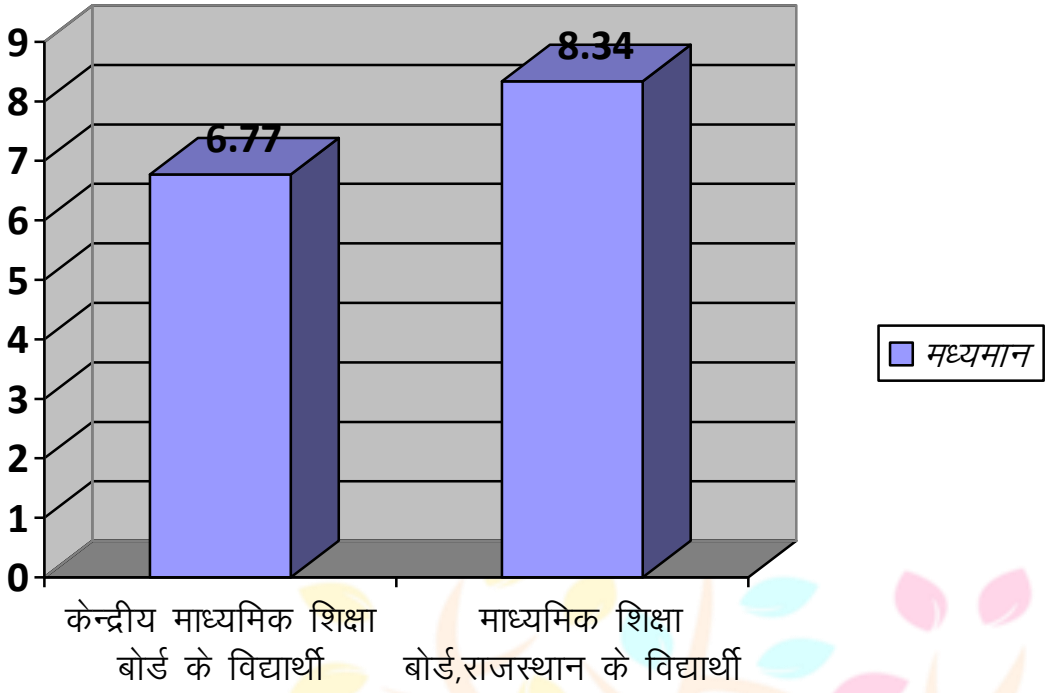

तालिका

क्र.सं.	विद्यार्थी	मध्यमान	प्रमाप विचलन	टी–मान	सार्थकता
1	केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड	6.77	1.83	4.24	0.05 विश्वासस्तर पर सार्थक
2	माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान	8.34	1.04		

उपरोक्त चार्ट एवं सारणी के अनुसार सवाईमाधोपुर जिले के केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक दुश्चिन्ता का मध्यमान 6.77 एवं प्रमाप विचलन 1.83 है, तथा सवाईमाधोपुर जिले के माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक दुश्चिन्ता का मध्यमान 8.34 तथा प्रमाप विचलन 1.04 है। मध्यमानों के अंतर की सार्थकता ज्ञात करने पर प्राप्त टी–परीक्षण मूल्य 4.24 है, जो 0.05 विश्वासस्तर के मूल्य 1.96 से अधिक है, जो कि मध्यमानों में अन्तर की सार्थकता को अभिव्यक्त करता है। अतः परिकल्पना–1 अस्वीकृत की जाती है।

सवाईमाधोपुर जिले के केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड एवं माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के समायोजन के मध्यमान का विश्लेषण एवं व्याख्या।

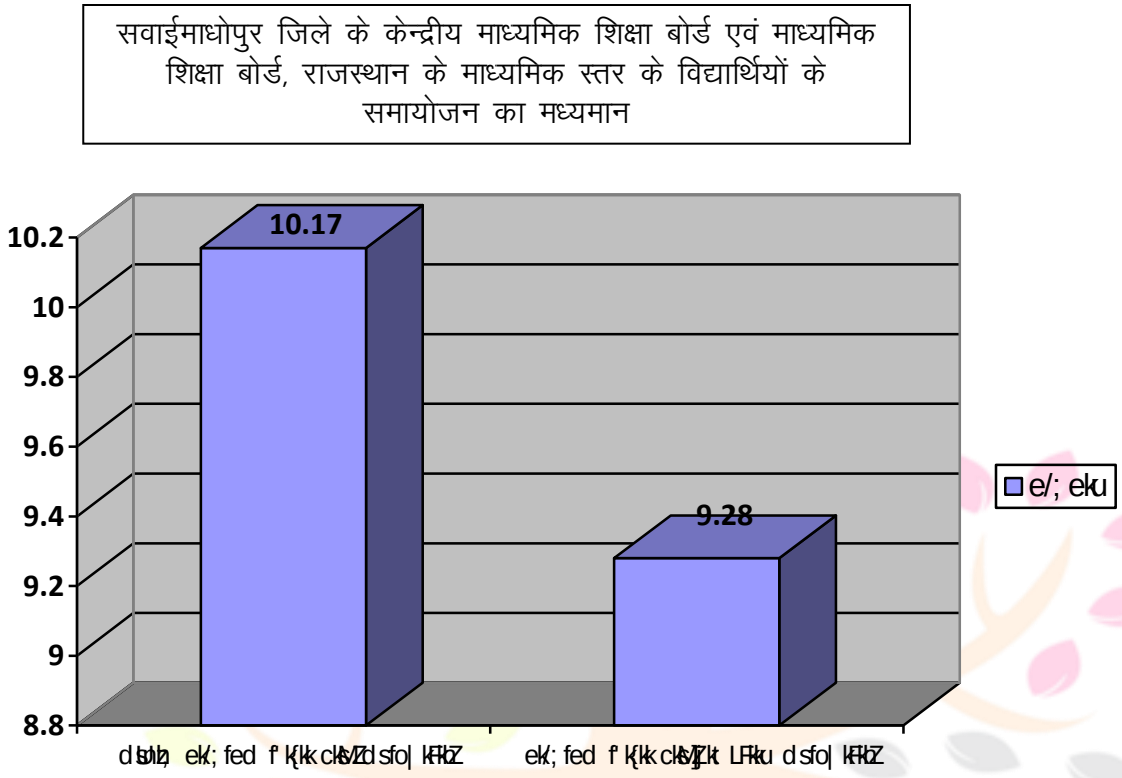

तालिका

क्र.सं.	विद्यार्थी	मध्यमान	प्रमाप विचलन	टी–मान	सार्थकता
1	केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड	10.17	3.87	1.06	0.05 विश्वासस्तर पर असार्थक
2	माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान	9.28	4.46		

उपरोक्त चार्ट एवं सारणी के अनुसार सवाईमाधोपुर जिले के केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के समायोजन का मध्यमान 10.17 एवं प्रमाप विचलन 3.87 है, तथा सवाईमाधोपुर जिले के माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के समायोजन का मध्यमान 9.28 तथा प्रमाप विचलन 4.46 है। मध्यमानों के अंतर की सार्थकता ज्ञात करने पर प्राप्त टी–परीक्षण मूल्य 1.06 है, जो 0.05 विश्वासस्तर के मूल्य 1.96 से कम है, जो कि मध्यमानों में अन्तर की असार्थकता को अभिव्यक्त करता है। अतः परिकल्पना–2 स्वीकृत की जाती है।

परिकल्पनाओं से सम्बन्धित निष्कर्षः–

- सवाईमाधोपुर जिले के केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड एवं माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक दुश्चिन्ता में सार्थक अन्तर पाया गया। अतः परिकल्पना–1 अस्वीकृत की जाती है।

- सवाईमाधोपुर जिले के केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड एवं माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के समायोजन में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। अतः परिकल्पना–2 स्वीकृत की जाती है।

निष्कर्ष एवं सुझावः–

सवाईमाधोपुर जिले के केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड एवं माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थिया के कुशल समायोजन होने के बाद भी माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान के विद्यार्थियों की शैक्षिक दुश्चिन्ता का स्तर केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के विद्यार्थियों की शैक्षिक दुश्चिन्ता का स्तर से उच्च पाया गया। विद्यार्थियों की शैक्षिक दुश्चिन्ता को कम करने के लिए मेहनत, लगन, अभ्यास तथा आत्मविश्वास से ओतप्रोत होकर सार्थक प्रयास करने चाहिए। कुशल समय प्रबंधन, गत सत्रों के प्रश्नों का अभ्यास, विद्यालय में नियमित उपस्थिति, उच्च सार्थकता, सही तैयारी और सजगता के साथ अपनी शैक्षणिक दुश्चिन्ता के स्तर को कम किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची –

- सुखिया एस.पी. मल्होत्रा(1970), शैक्षिक अनुसंधान के मूलतत्व, आगरा विनोद पुस्तक मन्दिर।
- ढोदियाल एस.एम.(1972) शैक्षिक अनुसंधान का विधि शास्त्र, राजस्थान ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।
- भटनागर, चांद तथा राय, पारसनाथ,(1977),''अनुसंधान परिचय'', एल.एन. अग्रवाल पब्लिशर्स, आगरा।
- बी.एस. शर्मा (1995), शोध प्रविधि, नेशनल पब्लिशिंग हाउस नई दिल्ली।
- बेस्ट, जॉन डब्ल्यू, (1997),''रिसर्च इन एज्यूकेशन'', प्रिंटिंग हॉल प्रा. लि., नई दिल्ली।
- गुप्ता एस.पी. और गुप्ता उमा(1999), सांख्यिकी के सिद्वान्त, नई दिल्ली : सुलतान चन्द एण्ड सन्स दरियागंज।
- शर्मा, आर.ए.(2003), शिक्षा अनुसंधान, आर.लाल बुक डिपो मेरठ।
- कपिल, एच. के. (2006), '' अनुसंधान विधियाँ'', एच.पी. भार्गव बुक हाउस, आगरा।
- सरीन और सरीन अंजनी, (2007), ''शैक्षिक अनुसंधान विधियाँ'', आगराः विनोद पुस्तक मन्दिर।
- शर्मा, आर.ए., (2009), ''शैक्षिक अनुसंधान'', आर. लाल बुक डिपो, मेरठ।